ऋग्वैदिक काल (1500-1000 BC) • स्रोत - इस काल के इतिहास के लिए लिखित स्रोत भी मिलने लगते हैं।

- पांच नदियाँ - झेलम (वितस्ता), चेनाब (असिक्नी), सतलज (शतुद्री), रावी (परुष्णी), व्यास (विपाशा)
  (अपविशि)
- आर्य लोगों के जीतने के कारण - (i) अश्वचालित रथ (ii) कवच (वर्मन) उत्कृष्ट अस्त्र
- तांबे या कांसे के अर्थ में 'अयस' शब्द का प्रयोग
- युद्ध का पर्याय - गविष्टि - अधिकांश लड़ाइयां गायों को लेकर। गायों की रक्षा करना राजा का मुख्य धर्म इसलिए राजा गोप या गोपति कहलाता था।
- ऋग्वेदकालीन महत्वपूर्ण स्थल - हरियाणा का भगवानपुरा
- व्यापार के अस्तित्व का स्पष्ट प्रमाण नहीं
- ग्रामीण व्यवस्था; समाज प्रथमतः पशुचारक; अर्द्ध यायावर (लगभग खानाबदोश); गाय की चर्चा की तुलना में कृषि की चर्चा ऋग्वेद में बहुत ही कम है।
- मवेशी और धन दोनों समानार्थक माने जाते थे और 'गोमत्' का अर्थ होता था धनवान।
- परिवार में गाय का स्थान इतना महत्वपूर्ण था कि बेटी को दुहितृ अर्थात दुहने वाली कहा जाता था। गायों से घनिष्ठता के कारण आर्यों ने भैंस पहली बार देखा तो उसे गोवल अर्थात गाय जैसी बालों वाले कहने लगे

ऋग्वैदिककालीन राज्यव्यवस्था

(1) कबीले का प्रधान – राजन् (युद्ध का नेतृत्व)
→ अनुवांशिक पद

(2) राजन् के हाथ में असीमित अधिकार नहीं — ग्राम सभा (समिति)

(3) कबीलों या कुलों के आधार पर वर्न संगठन – सभा, समिति, विदथ, गण

(4) अधिकारी – (i) पुरोहित – वशिष्ठ, विश्वामित्र
(ii) सेनानी – शस्त्र चलाना जानते थे
(iii) करसंग्रह और न्यायाधिकारी का उल्लेख नहीं
→ प्रजा राजा को इसका अंश स्वेच्छा से दे देती थी – बलि
(iv) गुप्तचर
(v) व्राजपति – चारागाह का अधिकारी
(vi) कुलप – परिवारों के प्रधान
(vii) ग्रामणी – लड़ाकू दलों का प्रधान / मुखिया
(viii) विश् – किसान वर्ग जो सेना का कार्य भी करते थे
(ix) व्रात, गण, ग्राम और सर्ध नाम से विदित विभिन्न टोलियाँ सैनिक कार्य का संचालन करती थीं

(5) स्थायी सेना का अभाव और युद्ध के समय एक नागरिक सेना का गठन

(6) कबायली शासन जिसमें सैनिक तत्व प्रबल

(7) नागरिक शासन या प्रादेशिक शासन का अस्तित्व नहीं क्योंकि वे निरंतर स्थान बदलते थे।

स्त्रियों की स्थिति

(1) समाज पितृसत्तात्मक – वीर पुत्रों की प्राप्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना
(2) सभा समिति में भाग ले सकती थीं, यज्ञ में आहुतियाँ देना
(3) अपाला, घोषा, लोपामुद्रा जैसी प्रसिद्ध नारियों का उल्लेख
(4) ~~विवाह संस्था में~~ माता के नाम पर पुत्रों का नामकरण – मामतेय
(5) बहुपति प्रथा और विधवा विवाह का प्रचलन
(6) विवाह संस्था में आदिम प्रथा की झलक – जुड़वा भाई-बहन यम और यमी की कहानी।

सामाजिक वर्गीकरण

- समाज में वर्गों के सृजन का सबसे बड़ा कारण – आर्यों की मूल वासियों पर विजय
- जीते गए दास और दस्यु जनों के लोग दास और शूद्र हो गए
  → खेती या उत्पादनात्मक कार्य में नहीं लगाए जाते थे
- समाज –
  - योद्धा
  - पुरोहित
  - प्रजा
  - शूद्र (उल्लेख ऋग्वेद के दसवें मंडल में)
- व्यवसाय के आधार पर समाज का वर्गीकरण (वर्ग विभाजन कड़ा नहीं) – ऋग्वेद में किसी परिवार का एक सदस्य कहता है कि – "मैं कवि हूँ, मेरे पिता वैद्य हैं और मेरी माता चक्की चलाने वाली है, भिन्न-भिन्न व्यवसायों से जीविकोपार्जन करते हुए हम एक साथ रहते हैं।"
- युद्ध में प्राप्त संपत्ति के असमान वितरण से समाज में असमानता

(5.)

• ऋग्वेद में उत्पादन पद्धति द्वारा सर्जित सामाजिक संरचना का चित्र दृष्टिगोचर नहीं होता है क्योंकि अर्थव्यवस्था का आधार पशुचारण होने के कारण कर वसूलने की गुंजाइश कम। संभवतः वस्तु विनिमय प्रणाली का प्रचलन

↳ कुलीन वर्ग उत्पादन के नियंत्रणकर्ता और निम्न श्रेणी के लोग उत्पादन कार्य में संलग्न।

ऋग्वैदिक देवता और देवियाँ

(1) इन्द्र - पुरन्दर (किला तोड़ने वाला), वर्षा का देवता
(2) अग्नि
(3) वरुण - जल या समुद्र का देवता, ऋत अर्थात् प्राकृतिक संतुलन का रक्षक
(4) सोम - वनस्पतियों का देवता
(5) मरुत - आंधी के देवता
(6) ~~देव~~ अदिति और उषा (देवियाँ) - प्रभात समय के प्रतिरूप

देवताओं के उपासना की मुख्य रीति - स्तुतिपाठ और यज्ञ बलि (शाक, जौ आदि); वस्तुएं चढ़ाते समय आनुष्ठानिक मंत्र नहीं

कुछ अवैदिक देवताओं को भी स्वीकार किया गया था - जैसे रुद्र, त्वाष्ट्री आदि

ऋग्वेद के परवर्ती काल के मंडलों में एकेश्वरवाद के चिन्ह मिलते हैं। संभावना यह व्यक्त की जाती है कि क्योंकि कबायली जीवन में आए तनाव एवं दरार के कारण छोटे-छोटे कबीले बड़ी इकाईयों में विलीन होकर एकराष्ट्र बनते जा रहे थे।